A National, Registered & Refereed Monthly Journal : Education
Since March 2002
Research Link - 172, Vol - XVII (5), July - 2018, Page No. 9-10
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

डॉ. मारिया मॉन्टेसरी के कार्यों का समीक्षात्मक अध्ययन

प्रस्तुत शोधपत्र ''डॉ.मारिया मॉन्टेसरी के कार्यों के समीक्षात्मक अध्ययन'' से सम्बन्धित है। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन बालकों की शिक्षा के पुण्य कार्य में व्यतीत किया। वे अपनी पद्धति को अधिकाधिक वैज्ञानिक बनाने में संलग्न रहीं। 3-6 वर्ष के बच्चों की शिक्षा की ओर उनका सबसे अधिक ध्यान था। मॉन्टेसरी ने पिछड़े हुए बालकों की शिक्षा के लिए एक विशिष्ट पद्धति को जन्म दिया, जिसे मॉन्टेसरी पद्धति कहा जाता है। उन्होंने मन्द बुद्धि के बालकों से सम्बन्धित अपने विचारों को शिक्षकों के एक सम्मेलन में प्रस्तुत किया। परिणामस्वरुप मूढ़ बालकों को कैसे समझा जाए और कैसे उनको नवीन पद्धति से शिक्षित किया जाए, इस विषय पर व्याख्यान देने के लिए रोम विश्वविद्यालय के शिक्षाधिकारी ने डॉ.मॉन्टेसरी को वहां आमंत्रित किया, इसके पश्चात् इनकी नियुक्ति मंदबुद्धि बालकों को सुधारने वाली एक संस्था में शिक्षाधिकारी के पद पर हुई।

श्रीमती नीलम शुक्ला* एवं डॉ. शिवनारायण मिश्र**

यूरोपीय शिक्षा के इतिहास पर दृष्टि डालने से यह ज्ञात होता है कि यूरोप की पहली महिला शिक्षाविद् को जन्म देने का श्रेय इटली को जाता है। मेरिया मॉण्टेसरी एक इतालवी शिक्षाविद्, वैज्ञानिक, चिकित्सक, दार्शनिक, नारीत्ववादी एवं मानवतावादी थी।[1] मॉण्टेसरी बालक और बाल मस्तिष्क की विशेषज्ञा विद्यादात्री सरस्वती माता थीं। बालकों की स्वतन्त्रता के युग का प्रवर्तन करने वाली जड़ता व गुलामी से मानव जाति को उबारने का प्रारम्भिक अभियान छेड़ने वाली डॉ0 मेरिया मॉण्टेसरी ही थी।[2]

कार्य :

डॉ0 मेरिया मॉण्टेसरी ने अपना सम्पूर्ण जीवन बालकों की शिक्षा के पुण्य कार्य में व्यतीत किया। वे अपनी पद्धति को अधिकाधिक वैज्ञानिक बनाने में संलग्न रहीं। 3–6 वर्ष के बच्चों की शिक्षा की ओर उनका सबसे अधिक ध्यान था। मॉन्टेसरी ने पिछड़े हुए बालकों की शिक्षा के लिए एक विशिष्ट पद्धति को जन्म दिया जिसे मॉन्टेसरी पद्धति (Montessori Method) कहा जाता है। उन्होंने मन्द बुद्धि के बालकों से सम्बन्धित अपने विचारों को शिक्षको के एक सम्मेलन में प्रस्तुत किया। परिणाम स्वरुप मूढ़ बालकों को कैसे समझा जाए और कैसे उनको नवीन पद्धति से शिक्षित किया जाए, इस विषय पर व्याख्यान देने के लिए रोम विश्वविद्यालय के शिक्षाधिकारी ने डॉ0 मॉण्टेसरी को वहाँ आमंत्रित किया इसके उपरान्त डॉ मेरिया मॉण्टेसरी की नियुक्ति मंदबुद्धि वाले बालकों को सुधारने वाली एक संस्था में शिक्षाधिकारी के पद पर हुई।

मेरिया मॉण्टेसरी के समय में इटली में गरीब लोगों के लिए आवास की समस्या अत्यन्त विकट थी। इन लोगों के लिए अपना वैयक्तिक जीवन जैसी कोई बात नहीं थी। ऐसे दुखद जीवन से इन्हें मुक्ति दिलाने का विचार इटली के एक प्रतिष्ठित, विद्वान तथा देशभक्त रोमन सैनोर एडवर्डो टालमों के मन में आया। गरीब माता–पिता जब दिन भर अपनी आजीविका के लिए घर से बाहर रहते थे उस समय विद्यालय न जाने वाले उनके नन्हे मुन्ने बच्चे नितांत स्वच्छंदता से घर में अकेले रह जाते थे और अनेक प्रकार की शरारते करते थे। टालमो ने इस समस्या के समाधान के लिए प्रत्येक बस्ती में बालकों के लिए एक अलग कमरे की व्यवस्था की तथा देख रेख करने वाले किसी योग्य व्यक्ति की तलाश करने लगा। इस कार्य के लिए टालमो ने मॉण्टेसरी से अनुरोध किया कि वे इन बालकों को अपनी देखरेख में लेकर इन्हे उपयोगी प्रवृत्ति प्रदान करें। डॉ0 मॉण्टेसरी अपने विचारों के अनुरूप जो–जो प्रयोग करना चाहती थी, उनके योग्य पात्र इन्हें वहां मिलने की सम्भावना थी। डॉ0 मॉण्टेसरी ने तत्काल टालमों का अनुरोध स्वीकार कर लिया और सरकारी नौकरी छोड़कर गरीबों के बालकों को शिक्षा देने का कार्य स्वीकार कर लिया। परिणाम स्वरूप 'सन् 1907 में पहला बाल गृह खुला।[3] इस समय मॉण्टेसरी की तरफ लोगो का ध्यान आकृष्ट नहीं था। इन्होंने अपने शिक्षण सम्बन्धी विचार गरीब बालकों पर आजमायें और इसमें डॉ0 मॉण्टेसरी को पूर्ण रूपेण सफलता प्राप्त हुई। अगले वर्ष 1908 में दूसरा बाल गृह खुला। इस समय तक जनता में मॉण्टेसरी की कीर्ति फैल चुकी थी। दूसरे बाल गृह के उद्घाटन के अवसर पर डॉ0 मेरिया मॉण्टेसरी ने एक सुन्दर और मननीय भाषण दिया जो 'मॉण्टेसरी पद्धति' नामक पुस्तक के 'प्रारम्भिक व्याख्यान' शीर्षक अध्याय में उद्धृत है।

बालगृह में ही उनका (मॉण्टेसरी) ध्यान सामान्य बुद्धि बालकों पर भी गया और मॉण्टेसरी ने अपनी पद्धति का प्रयोग सामान्य बुद्धि बालकों पर भी किया। अपने प्रयोगों के आधार पर उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि 3 वर्ष का सामान्य बुद्धि का बालक 6 वर्ष के मन्द बुद्धि

**शोधछात्रा, डॉ.राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उत्तरप्रदेश)*
***उपाचार्य (शिक्षाशास्त्र विभाग), राजा राममोहन गर्ल्स पी.जी. गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, फैजाबाद (उत्तरप्रदेश)*

बालक के समान होता है। इसीलिये मॉण्टेसरी ने अपनी पद्धति से इसी अवस्था के बालकों को शिक्षा देना आरम्भ किया। इस कार्य में उन्हें आगे भी सफलता मिलती गयी तथा उन्होने अपनी पद्धति को 3 से 6 वर्ष तक के बालकों के लिए निश्चित किया। इसके आधार पर सन् 1912 ई0 में डॉ0 मेरिया मॉण्टेसरी ने 'मॉण्टेसरी मेंथड' नामक ग्रन्थ लिखा। '1922 में मॉण्टेसरी शिशु विद्यालयों की निरीक्षिका नियुक्त की गई।'[4] योरोप में अपने कार्य के प्राचारार्थ डॉ0 मॉण्टेसरी ने विभिन्न देशों की यात्रा की और मॉण्टेसरी विद्यालय भी स्थापित किये। अपने विचारों में जनतन्त्र की भावना रखने के कारण मॉण्टेसरी का विरोध नाजी और फासिस्ट शासकों ने किया, जिसके परिणाम स्वरूप मॉण्टेसरी के द्वारा स्थापित विद्यालयों को जर्मनी में सबसे पहले सन् 1935 ई0 में बन्द किया गया और 1936 ई0 में इटली के शासकों ने भी वैसा ही किया। दूसरे महायुद्ध (1939–45) के समय मॉण्टेसरी को देश निकाला भी हो गया। फलस्वरूप मॉण्टेसरी योरोप छोड़कर अन्य देशों में आ गई और इसी समय (1939 ई0 में) वह भारत में भी आई। 1947 ई0 में इटली सरकार ने पुनः मॉण्टेसरी को बुलाया और मॉण्टेसरी विद्यालयों की पुनः स्थापना किया।

लिखित कार्य :

डॉ0 मेरिया मॉण्टेसरी ने अपने अनुभव व प्रयोग के आधार पर जिन पुस्तकों व ग्रन्थों की रचना की, वे निम्नलिखित है :

(1) दि मॉण्टेसरी मेथड
(2) दि सीक्रेट ऑफ चाइल्डहुड
(3) एजुकेशन फार ए न्यू वर्ल्ड
(4) चाइल्ड ट्रेनिंग
(5) दि डिस्कवरी ऑफ दि चाइल्ड
(6) टू ऐजुकेट चिल्ड्रन
(7) व्हाट यू कैन नो एबाउट योर चाइल्ड
(8) एडवांस्ड मॉण्टेसरी मेथड
(9) दि डाइडैक्टिक मेंटिरियल आफ एजुकेशन फॉर दि चिल्ड्रन फ्राम वन टु एलेवन इयर्स।
(10) द ज्वाय फुल चाइल्ड।
(11) टू एजूकेट द ह्यूमन पोटेन्शियल।

अन्य कार्य :

व्याख्यान (भाषण) :

डॉ0 मेरिया मॉण्टेसरी अपने कार्य सम्बन्धी सूचनाओं को व्याख्यानों के माध्यम से प्रकट करती थी। 1913 ई0 में मॉण्टेसरी ने अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यान माला आरम्भ कीं। 1919 ई0 में लन्दन में एक प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन भी किया। भारत के थियोसिफिकल सोसाइटी के आमंत्रण पर मॉण्टेसरी 1939 ई0 में यहां आकर भाषण दिया और मॉण्टेसरी संघ की एक शाखा खोली तथा विद्यालय भी आरम्भ किया। डॉ0 मॉण्टेसरी के अहमदाबाद, अडयाद, कोडाइकनाल, और कश्मीर तथा जम्बू में व्याख्यान हुए। सीलोन (श्रीलंका) में 1946 ई0 में राज्य की ओर आमंन्त्रित होकर एक व्याख्यानमाला प्रस्तुत की। 1950 ई0 में डॉ0 मेरिया मॉण्टेसरी ने अमेरिका 'यूनेस्को' में माननीय भाषण दिया। '1951 ई0 में लन्दन में डॉ0 मॉण्टेसरी ने कांग्रेस में भाग लिया यह उनका अन्तिम कार्य था।'[5]

स्थापित संस्थाएँ :

डॉ0 मेरिया मॉण्टेसरी ने अपने जीवनकाल में योरोप तथा अन्य देशों में अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। 1939 ई0 में डॉ0 मॉण्टेसरी भारत आयी और उन्होने यहां माण्टेसरी संघ की स्थापना की तथा विद्यालय भी स्थापित किये। 1946 में डॉ0 मॉण्टेसरी पुनः यूरोप गई और लन्दन और एडिनबरा में अन्तर्राष्ट्रीय ट्रेनिंग कोर्स का प्रारम्भ किया।

सन् 1948 ई0 में डॉ0 मॉण्टेसरी पुनः भारत आई। पूना, अदयार और ग्वालियर में लेक्चर दिये और स्कूल स्थापित किये।[6]

सन् 1949 में डॉ0 मॉण्टेसरी पाकिस्तान भी गई और भाषण दिया।

डॉ0 मेरिया मॉण्टेसरी के संपादकत्व में एम्सटडेम से एक त्रैमासिक 'काल ऑफ एज्युकेशन– प्रकाशित होने लगा है, जो फ्रेंच, अंग्रेजी व इतालवी भाषाओं में छपता हैं।

इटली में मॉण्टेसरी पद्धति का प्रशिक्षण देने के लिए एक शिक्षक प्रशिक्षणालय खोला गया है, जहाँ तीन वर्ष का पाठ्यक्रम है। 'लंदन में एक मॉण्टेसरी सोसाइटी स्थापित हुई है, जहां से प्रति माह एक पत्रिका छपती है – 'मोंटेसोरियन'।[7]

सन्दर्भ :

***(1)** Karmer, Rita (1976) : Maria Montessori, Longman Canada Limited. **(2)** Maria Montessori, Dr. Montessori's own Handbook, Robert Bentlry, Inc 1964 **(3)** बधेका, गिजुभाई (1999) : मॉण्टेसरी पद्धति, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, पृ0सं0 17. **(4)** गुप्त, लक्ष्मी नारायण, (1992–93) : महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री, कैलाश प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद–3, पृ0सं0 108. **(5)** गुप्त, लक्ष्मी नारायण (1993) : महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री, कैलाश प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद–3, पृ0सं0 94. **(6)** गुप्त, लक्ष्मी नारायण (1993) : महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षाशास्त्री, कैलाश प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद, पृ0 सं0 94. **(7)** बधेका, गिजुभाई (1999) : मॉण्टेसरी पद्धति, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 1999, पृ0सं0 18.*

❁❁